E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

नासदीय (परमात्मा) देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

वेद भारतीय वाङ्मय की अमूल्य निधि हैं। वे मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के प्रातिभ ज्ञान की अन्यतम उपलब्धि हैं। हमारे ऋषियों की अनन्त ज्ञानराशि का दुर्लभ संचय हैं। वैदिक देवताओं की स्तुतियों के साथ ऋग्वेद में लौकिक एवं धार्मिक विषयों से सम्बद्ध तथा आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अनेक सूक्त हैं। इनमें आध्यात्मिक सूक्त दिव्यज्ञान से ओतप्रोत हैं। इन्हें दार्शनिक सूक्तके रूपमें भी जाना जाता है। ऋग्वेद के दार्शनिक सूक्तों में पुरुषसूक्त, हिरण्यगर्भसूक्त, वाक्सूक्त तथा नासदीयसूक्त अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ऋग्वेद के ये सूक्त अपनी दार्शनिक गम्भीरता एवं प्रातिभ अनुभूति के कारण विशेष महिमा-मण्डित हैं। सूक्तों में ऋषियों की ज्ञान गम्भीरता तथा सर्वथा अभिनव कल्पना परिलक्षित होती है। समस्त दार्शनिक सूक्तों के बीच नासदीय सूक्त का अपना विशेष महत्त्व है। ऋग्वेद के दार्शनिक सूक्तों में यह सर्वाधिक प्रख्यात है। सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी सूक्तों में यह अत्यन्त गम्भीर चिन्तन-सरणि का द्योतक है। इसके द्रष्टा प्रजापति (परमेष्ठी) हैं। सूक्त का नामकरण इसके प्रथम मन्त्रगत प्रथम पद 'नासत्' के आधार पर हुआ है। प्राञ्जलभावों से परिपूर्ण यह सूक्त ऋषि की आध्यात्मिक चिन्तन-धारा का परिचायक है।

नासदीय सूक्त में सृष्टि के मूलतत्त्व, गूढ रहस्य का वर्णन किया गया है। सृष्टि रचना-जैसा महान् गम्भीर विषय ऋषि के चिन्तन में किस प्रकार प्रस्फुटित होता है, यह नासदीय-सूक्त में देखने को मिलता है। गहन भावाकाश में ऋषिकी मेधा किस प्रकार अबाध विचरण करती है, यह नासदीय-सूक्त में उत्तम प्रकारसे प्रदर्शित हुआ है। सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अत्यन्त सूक्ष्मता से विचार किया गया है। इसीलिये यह सूक्त 'सृष्टिसूक्त' अथवा 'सृष्ट्युत्पत्तिसूक्त' के नामसे भी जाना जाता है।

नासदीय सूक्त में कुल सात मन्त्र हैं। सूक्त में ऋषि सर्वप्रथम कहते हैं कि सृष्टि के पूर्व प्रलयावस्था में न तो (नामरूपविहीन) असत् था और न उस अवस्था में (नामरूपात्मक) सत् ही अस्तित्व

में था। उस समय न तो अन्तरिक्ष था न कोई लोक था और न व्योम था। न कोई आवश्यक तत्त्व था अथवा न भोक्ता-भोग्य की सत्ता थी। उस समय जल तत्त्व का भी अस्तित्व नहीं था।

उस अवस्था में न तो मृत्यु थी और न अमरत्व था। न निशा थी और न दिवस था। सृष्टि का अभिव्यञ्जक कोई भी चिह्न उस समय नहीं था। केवल एक तत्त्व था, जो बिना वायु के भी अपनी ऊर्जा से श्वास ले रहा था और बस उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं था।

सृष्टि से पूर्व प्रलयावस्था में तम ही तम से आच्छन्न था, अर्थात् सर्वत्र अन्धकार-ही-अन्धकार था। उस अवस्था में नामरूपादि विशेषताओं से परे कोई एक दुर्ज्ञेय तत्त्व था, जो सृष्टि सर्जना के संकल्प की महिमा से स्वयं आविर्भूत हुआ। सृष्टि से पूर्व की अवस्था में उस एकाकी के मन में सृजन का भाव उत्पन्न हुआ। उसी की परिणति सृष्टि के जड-चेतनरूप असंख्य आकारों में हुई। यही सृष्टि तन्तु का प्रसार था। सृष्टि का विस्तार था।

ऋषि कहते हैं कि सृष्टि के पूर्व प्रलयावस्था में जब नाम-रूपात्मक सत्ता ही नहीं थी, तब यथार्थरूप में कौन जानता है कि विविधस्वरूपा यह सृष्टि कहाँ से और किससे उत्पन्न हुई? देवता इस रहस्य को नहीं बतला सकते, क्योंकि देवता भी तो सृष्टि-रचना के अनन्तर ही अस्तित्व में आये थे। विविधरूपा यह सृष्टि उपादानभूत जिन परमात्मा से उत्पन्न हुई, वे इसे धारण करते हैं, अन्यथा कौन इसे धारण करने में समर्थ है? अर्थात् परमात्माके अतिरिक्त इस सृष्टिको धारण करनेमें कोई समर्थ नहीं है। इस सृष्टि के अधिष्ठाता जो परम उत्कृष्ट आकाशवद् निर्मल स्वप्रकाश में अवस्थित हैं, वे ही इस सृष्टि-रहस्यको जानते हैं, अन्यथा कौन दूसरा इसे जानने में समर्थ है। अर्थात् वे सर्वज्ञ ही इस गूढ सृष्टि-रहस्यको जानते हैं, उनके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जानता।

नासदीय के तीन भाग हैं। प्रथम भाग में सृष्टि के पूर्व की स्थिति का वर्णन है। उस अवस्थामें सत्-असत्, मृत्यु- अमरत्व अथवा रात्रि-दिवस कुछ भी नहीं था। न अन्तरिक्ष था, न आकाश था, न कोई लोक था, न जल था। न कोई भोग्य था, न भोक्ता था। सर्वत्र अन्धकार-ही-अन्धकार था। उस समय तो बस, केवल एक तत्त्व का ही अस्तित्व था, जो वायु के बिना भी श्वास ले रहा था। द्वितीय भाग में कहा गया है कि जो नाम-रूपादि-विहीन एकमात्र सत्ता थी, उसी की महिमा से संसाररूपी कार्य

प्रपञ्च प्रादुर्भूत हुआ। इस परम सत्ता में सिसृक्षाभाव उत्पन्न हुआ और तब चर-अचररूप निखिल सृष्टि ने आकार ग्रहण किया। तृतीय भाग में सृष्टि की दुर्ज्ञेयता का निरूपण किया गया है। समस्त ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई भी नहीं है, जो यह कह सके कि यह सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई? सामर्थ्यवान् देवता भी नहीं कह सकते, क्योंकि वे भी तो सृष्टि-रचना के बाद ही अस्तित्व में आये थे। संसार सृष्टि के परम गूढ रहस्य को यदि कोई जानते हैं तो केवल वे जो इस समस्त सृष्टि के अध्यक्ष हैं, अधिष्ठाता हैं। उनके अतिरिक्त इस गूढ तत्त्वको कोई नहीं जानता।

नासदीय सूक्त में ऋषि ने सृष्टि-सर्जनाके गुह्यतम रहस्य को निरूपित किया है। हमारे लिये यह परम गौरव का विषय है कि दर्शन के इस अतिशय गूढ सिद्धान्त का विवेचन सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य, वसिष्ठ, जनक, व्यास, शंकराचार्य प्रभृति दार्शनिक महाविभूतियों की प्रादुर्भाव-भूमि भारतवर्ष में हुआ। ऋग्वेद के नासदीय-सूक्त की गणना विश्वके शिखर साहित्यमें होती है। जगत्-सर्जना के रहस्य को उद्घाटित करने की भावना से विश्व के किसी भी मनीषी (कवि) -के द्वारा नासदीय-सूक्त से अधिक गम्भीर एवं प्रशस्त काव्यकृति आजतक नहीं रची गयी। यह अपने आप में इस सूक्त की उत्कृष्टता का संदेश देता है। दर्शन एवं कविता दोनों की उच्चतम कल्पना की अभिव्यक्ति इस सूक्त में मिलती है। सूक्त में आध्यात्मिक धरातल पर विश्व-ब्रह्माण्ड की एकता की भावना स्पष्ट रूपसे अभिव्यक्त हुई है। विश्व में एकमात्र सर्वोपरि सर्जक एवं नियामक सत्ता है, इसका भी सूक्त में स्पष्ट संकेत मिलता है। नासदीय-सूक्त के इसी विचार बीज का पल्लवन एवं विकास आगे अद्वैतदर्शन में होता है। भारतीय संस्कृति में यह धारणा–मान्यता बद्धमूल है कि विश्व ब्रह्माण्ड में एक ही सर्वोच्च सत्ता है, जिसका नाम रूप कुछ भी नहीं है। नासदीय सूक्त में इसी सत्य की अभिव्यक्ति है।